Std VII Sanskrit 18.11.2020

पाठ - वसन्तस्य शोभा

II अनुवाद

1. अहा! कैसी सुन्दर वसन्त ऋतु है।
2. वसन्त ऋतु में मन्द, सुगन्धित वायु बहती है।
3. पेड़ों की शाखाओं पर नवीन कोमल पत्ते उगते हैं।
4. पौधों और लताओं पर फूल खिलते हैं।
5. सब ओर सुगन्ध फैलती है।
6. शिशु बन्धुओं के साथ बाग को जाते हैं।
7. वे सब शुद्ध वायु में घूमते और खेलते हैं।
8. सूर्य के उगने से पहले साधु उठते हैं।

Scanned with CamScanner

9. साधु स्नान करके सूर्य को अर्घ्य देते हैं।

10. इसके बाद वे प्रभु को नमस्कार करके बाग को जाते हैं।

11. छात्र प्रातः उठकर गुरू के समीप जाते हैं।

12. वे कहते हैं - हे गुरू! (हम सब) प्रणाम करते हैं।

13 गुरू शिशुओं को आशीर्वाद देता है।

14. बाद में वे भी गुरू के साथ बाहर घूमने के लिए जाते हैं।

15. गुरू की कृपा से वे निपुणता और स्वास्थ्य को पाते हैं।

16. वसन्त ऋतु में शत्रु भी मित्र होते हैं।

17. पशु पक्षी भी प्रसन्नता को अनुभव करते हैं।

Scanned with CamScanner